# राजाराम मोहन राय

Ans राजा राममोहन राय वस्तुतः एक समाज सुधारक थे जिन्होंने सामाजिक पुनर्निर्माण एवं शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम कार्य किया। उन्हें भारत की सामाजिक क्रान्ति का अग्रदूत कहा जा सकता है। उन्होंने यह विश्वास व्यक्त किया कि धर्म और समाज सुधार की अनुपस्थिति में केवल राजनीतिक विकास का कोई मूल्य नहीं रहेगा। उन्होंने राजनीतिक प्रगति और सामाजिक - धार्मिक सुधारों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध सुनिश्चित करते हुए निम्नलिखित विचार प्रस्तुत किए —

→ मूर्ति पूजा का विरोध — राजा राममोहन राय ने मूर्ति पूजा का घोर विरोध किया। उन्होंने इस मत का प्रतिपादन किया कि मूर्ति पूजा हिन्दू धर्म का कोई मौलिक अंग नहीं है अपितु इसका चलन बाद में जाकर हुआ है राजा राममोहन राय का कहना था कि 'उपनिषद अद्वैतवाद की शिक्षा देते हैं जिसमें मूर्ति पूजा का कोई स्थान ही नहीं है।"

→ सती प्रथा का विरोध — राजा राममोहन राय सती प्रथा के विरुद्ध अभियान चलाने वाले प्रथम भारतीय थे। उनकी दृष्टि में सती-प्रथा या 'सहमरण' शास्त्रसम्मत प्रथा नहीं है, शास्त्र विहित कुसंस्कार है। उनके उग्र विरोध के कारण ही लॉर्ड विलियम बैंटिक ने एक आज्ञा जारी कर सती प्रथा को सन् 1829 में निषिद्ध घोषित कर दिया। सोफिया कॉलेट

2

के शब्दों में, "राममोहन राय ने हिन्दू धर्मग्रन्थों के अपने गम्भीर ज्ञान के आधार पर यह प्रमाणित किया कि सती प्रथा धर्मसंगत नहीं थी इतना ही नहीं, उन्होंने यह भी दिखाया कि स्वार्थी सम्बन्धि किसी धार्मिक प्रेरणा से नहीं, बल्कि विधवाओं के भरण-पोषण के खर्च से छुटकारा पाने के लिए इस प्रथा को जारी रखना चाहते थे।"

→ नारी स्वातन्त्र्य एवं नारी शिक्षा के समर्थक —
राजा राममोहन राय आधुनिक भारत के नारी स्वातन्त्र्य के अग्रदूत माने जा सकते हैं। उन्होंने नारी स्वातन्त्र्य, नारी अधिकार और नारी शिक्षा पर बड़ा बल दिया तथा हिन्दू नारी के साथ किये जाने वाले अन्याय और अत्याचार की कटु निन्दा की। अपने मृत पति की सम्पत्ति में स्त्री को उचित भाग न देने के नियम की उन्होंने विशेष रूप से भर्त्सना की। वे चाहते थे कि सरकार ऐसा कानून पारित करे जिससे कोई पुरुष ~~पहली~~ पत्नी के रहते हुए दूसरा विवाह न कर सके। राममोहन राय का यह स्वप्न था कि बाल विधवाएँ पुनर्विवाह करें और प्रौढ़ विधवाएँ आत्म-सम्मान का जीवन व्यतीत करने के लिए शिक्षित की जाएँ। उन्होंने यह मानने से इन्कार कर दिया कि स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा मन्द बुद्धि हैं। वे भारतीय महिलाओं को लीलावती, गार्गी, मैत्रेयी आदि के समान विदुषी बनने की प्रेरणा देते थे।

— जाति ~~व्यवस्था~~ प्रथा का विरोध — उन्होंने जाति व्यवस्था का भी घोर विरोध किया और इसे हिन्दू जाति का कलंक बताया। उनका विचार था

कि जाति प्रथा दोहरी कुरीति है। उसने असमानता पैदा की तथा जनता को आपस में विभाजित किया है साथ ही लोगों को देशभक्ति की भावना से वंचित रखा है। वे स्वयं अन्तर्जातीय विवाह के पक्ष में थे। शास्त्र का आधार प्रस्तुत करते हुए उन्होंने शैव विवाह पद्धति का समर्थन किया जिसमें उम्र, वंश एवं जाति का कोई व्यवधान नहीं होता।

इस प्रकार राजा राममोहन राय ने सामाजिक कुरीतियों तथा अन्याय की कटु भर्त्सना की और रूढ़िवादी परम्परावाद का खुलकर विरोध किया किन्तु उनका विश्वास था कि सामाजिक बुराईयों का अन्त करने का उग्र तरीका बुद्धिवाद का प्रचार करना है। इस प्रकार उनकी तुलना फ्रेंच ज्ञानकोष के लिए रचयिता दिदरो से की जा सकती है।

निष्कर्ष :— राजा राममोहन राय भारतीय राष्ट्रीयता के पैगम्बर और आधुनिक भारत के जनक थे। एक राजनीतिक चिन्तक, समाज-सुधारक और शिक्षाविद् के रूप में उन्होंने तत्कालिक भारत की समस्याओं के लगभग सभी प्रमुख पक्षों को छुआ और उनके निदान प्रस्तुत किए। उन्हें स्त्रियों के उद्धार में रुचि थी, उन्होंने प्रेस की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष किया। वे भारतीय सभ्यता की रैयतवाड़ी, कृषि प्रधान तथा [illegible]

प्राचीन ग्रामीण आधार को अक्षुण्ण रखने के पक्ष में थे। उन्होंने भारतीयता का त्याग नहीं किया था, उनका विरोध - भारतीय करण की विकृतियों से ही था। आधुनिकता के प्रभाव में उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता का मार्ग चुना। उन्होंने देश के नये राजनीतिक जीवन का सूत्रपात किया। अंग्रेज उन्हें एक निष्पक्ष भारतीय के रूप में देखते थे। सामाजिक एवं राजनीतिक सुधारों के क्षेत्र में उनके द्वारा १९वीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में ऐसे सुधारों की आधारशिला रखी गयी थी, जिसके आधार पर कालान्तर में आधुनिक भारतीय समाज तथा उदार एवं लोकतान्त्रिक राजनीतिक व्यवस्था की रचना हुई। सामाजिक एवं राजनीतिक सुधारों को अपनाने में राजा राममोहन राय का दृष्टिकोण विशुद्ध उपयोगितावादी एवं विवेकसंगत था। हिन्दू धर्म में व्याप्त कुछ बुराईयों को दूर करके वे इसे शुद्ध एवं लोकप्रिय बनाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे।

यह सत्य है कि राजा राममोहन राय कोई रीतिबद्ध दार्शनिक नहीं थे फिर भी भारत की भावी पीढ़ियों के लिए सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में उन्होंने ऐसी ज्योति जलाई जिसके प्रकाश में भारतीय समाज आगे बढ़ा।